



Original Article

'हरी बिंदी' और 'तिहार' कहानी संग्रह में चित्रित 'स्त्री' जीवन की समस्याएं

सफिया कासम मुल्ला

शोध छात्रा

हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

Manuscript ID:

IJAAR-C130370

ISSN: 2347-7075

Impact Factor – 8.141

Volume - 13

Issue - 3

January – February 2026

Pp. 364 - 368

Submitted: 06 Feb. 2026

Revised: 15 Feb. 2026

Accepted: 20 Feb. 2026

Published: 28 Feb. 2026

Corresponding Author:

सफिया कासम मुल्ला

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI: 10.5281/zenodo.22787218

DOI Link:

<https://doi.org/10.5281/zenodo.22787218>



Creative Commons



सार:

मानवी जीवन का समस्या से गहरा संबंध है। हर एक मानव के जीवन में समस्या है। इसी समस्याओं का सामना करते हुए मनुष्य अपने जीवन के लक्ष्य तक पहुंचता है। इसीलिए संघर्षों को जीवन का दूसरा नाम कहा गया है। साहित्यकार जीवन की समस्याओं को स्वयं झेलता है, अनुभव लेता है और अपने साहित्य में उतरता है। इस प्रकार साहित्यकार समाज के विविध प्रकार की समस्याओं का चित्रण अपने साहित्य में करता है। मृदुला गर्ग और प्रिया तेंडुलकर की कहानियों में विभिन्न प्रकार की समस्याओं को दर्शाया है। लेकिन इन दोनों लेखिकाओं के कहानी साहित्य में प्रमुख रूप से स्त्री जीवन की विविध समस्या देखने को मिलती है। आज की नारी के बारे में किरण बाला अरोड़ा लिखती है; “आज की नारी प्राचीन काल की नारी से अधिक प्रबुद्ध है और उसमें अपने अधिकारों के प्रति एक चेतना जागृत हुई है। वह अपनी समस्याओं के प्रति भी जागृति दिखाई देती है।”¹

मुख्य शब्द: हरी बिंदी, एक और विवाह, अगरर्यों होता, दुनिया का कायदा, ग्लेशियर से, झूलती कुर्सी, तुक, खरीदार, खाली, एक चीख का इंतजार, तिहार स्त्री वगैरे, शिबानीची अनाहिता, हॉप्पी बर्थ डे, खेळ मांडियेला, बाप, मां., दिल्ली।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

How to cite this article:

सफिया कासम मुल्ला. (2026). 'हरी बिंदी' और 'तिहार' कहानी संग्रह में चित्रित 'स्त्री' जीवन की समस्याएं. *International Journal of Advance and Applied Research*, 13(3), 364 - 368. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22787218>

मूल शोध –लेख:

'हरी बिंदी' यह कहानी संग्रह 'मृदुला गर्ग'द्वारा लिखित है। जिसमें अठराह कहानीयां है। जिसमें हरी बिंदी, एक और विवाह, अगरर्यों होता, दुनिया का कायदा, ग्लेशियर से, झूलती कुर्सी, तुक, खरीदार, खाली, एक चीख का इंतजार इन कहानियों

में हमें प्रधान रूप से स्त्री जीवन की समस्याएं नजर आती है। तथा 'तिहार' कहानी संग्रह प्रिया तेंडुलकर द्वारा लिखित है। जिसमें सात कहानी संग्रहित है। तिहार, स्त्री वगैरे, शिबानीची अनाहिता, हॉप्पी बर्थ डे, खेळ मांडियेला, मां, दिल्ली इन



कहानियों में हमें प्रधान रूप से मृदुला गर्ग की तरह स्त्री जीवन की अलग-अलग समस्याएं नजर आती हैं।

अतः इन दोनों लेखिकाओं ने स्त्री होने के नाते स्त्री के अंतर्भूत को कुरेती हुई दिखाई देती है। जिसमें उन्होंने उनकी अलग-अलग समस्याओं को दर्शाकर हमें विचार करने पर मजबूर किया है कि आज भी आधुनिक युग में स्त्रियां पुरुषों के बराबर काम करते हुए भी वह अलग-अलग प्रकार से समस्याओं से ग्रस्त हैं। पुराने जमाने में स्त्री पर बंदिशें थी उसी हिसाब से उसकी समस्याएं थीं। लेकिन आज स्त्री यह खुली हवा में विचारण करती है फिर भी वह अलग-अलग समस्याओं से ग्रस्त है। यहां हम मृदुला गर्ग की हरी बिंदी और प्रिया तेंडुलकर की तिहार कहानी संग्रह में चित्रित स्त्रियों की समस्याओं के बारे में चर्चा करेंगे। इस संदर्भ के बारे में डॉ. रमा नवले लिखती हैं। "रचनाकार जिस हवा में सांस लेता है वह हवा तो उसे प्रभावित करती है।"²

1) हरी बिंदी: इस कहानी की नायिका मीरा दांपत्य जीवन की घुटन, दिनचर्या, स्वतंत्र पहचान का अभाव और अपने आत्मखोज से अनजान इन समस्याओं से ग्रस्त है।

मीरा अपने पति राजन का एक दिन के लिए दिल्ली जाने के बाद अपने मन मुताबिक सजना-सवरना और विचारण करना चाहती है। यहां नायिका घुटन, बंदिश आदि से बाहर निकालने की कोशिश करती है। मीरा का नीले रंग के सूट पर हरे रंग की बिंदी लगाना यह सिर्फ शृंगार नहीं अपने घुटन, बंदिश की जंजीरों को तोड़ने का प्रयास है। अतः इस कहानी के अंतर्गत हमें नारी की घुटन, बंदिश, आत्मपहचान का अभाव आदि प्रकार की समस्याएं नजर आती हैं।

2) एक और विवाह: प्रस्तुत कहानी के अंतर्गत अविवाहित नारी की समस्या और अविवाहित रहने के पीछे के नारी के कारण को दर्शाया हुआ है। कहानी में कोमल और रानी दोनों

अविवाहित हैं। कोमल एक बुद्धिजीवी लड़की है। उसे उच्च शिक्षित वर चाहिए। लेकिन रानी अपने ऊपर छोटे-छोटे भाई बहनों की जिम्मेदारी की वजह से विवाह न कर पा रही है। इस प्रकार उच्च शिक्षा और अपने परिवार की जिम्मेदारी के कारण आज की स्त्री विवाह करने से दूर भागती हुई और अविवाहित रहना पसंद कर रही है। इसी प्रकार विवाह संस्कृति में आते हुए बदलाव और विवाह से दूर भागती नारी की समस्या को यहां लेखिका ने बहुत ही बखूबी दर्शाया हुआ है।

3) अगरयों होता: प्रस्तुत कहानी विवाह बाह्य संबंध पर आधारित है। कहानी की नायिका मधुर अपने मित्र जिम से प्रेम करती है। लेकिन अपने बच्चों के परवरिश की चिंता भी उसे है। मधुर अपने पति से सच्चा प्यार न मिलने से वह विवाह बाह्य संबंध रखने के लिए मजबूर है। पति-पत्नी में एक दूसरे के प्रति उदासीनता की समस्या इस कहानी में हमें देखने को मिलती है।

5) दुनिया का कायदा: इस कहानी के अंतर्गत हमें दो प्रकार की समस्याएं प्रमुखता देखने को मिलती हैं। उसमें से पहले समस्या यह है कि इसके अंतर्गत परंपरा से चली आ रही दहेज प्रथा को दिखाया गया है। जिसके अंतर्गत अपने बहू के मरने के उपरांत सांस अपने बेटे की दूसरी शादी के लिए फौरन तैयार होती है। वह अपने बेटे के लिए एक शिक्षित और ऊंचे पगार वाली लड़की को प्राप्त करने वाली औरत से अपने बेटे की शादी करना चाह रही है। तथा दूसरी समस्या यह है कि इस कहानी के अंतर्गत रक्षा नामक औरत का पति सुनील अपनी तरक्की के लिए अपने बॉस को खुश करने के लिए अपनी पत्नी का इस्तेमाल करता हुआ नजर आता है।

इस प्रकार से इस कहानी के अंतर्गत हमें दहेज की समस्या तथा अपने ही पति के द्वारा दूसरे व्यक्ति के लिए किए गए यौन शोषण की समस्या को दर्शाया गया है।



6) ग्लेशियर से: कहानी की नायिका का मिसेज दत्ता अनचाहे पठान के साथ ग्लेशियर देखने जाती है। ग्लेशियर का अद्भुत वातावरण देखकर वह वर्तमान को भुलकर अतीत में चली जाती है। होश में आने के बाद अपने पति के साथ घर लौटती है।

इस प्रकार नायिका की दमित वासना को पूर्ण पुरुष पाने की इच्छा को चित्रित किया है।

7) झूलती कुर्सी: कहानी की नायिका इंडियन एयरलाइंस में नौकरी करती है। वह एक युवक से प्यार भी करती है। लेकिन वह उसे प्राप्त नहीं करती। उसी के इंतजार में रैम्बल में वह अपने आप को अकेली महसूस करती है।

इस प्रकार इस कहानी में एक युवती के अकेलेपन की समस्या को दर्शाया हुआ है।

8) तुक: कहानी की मीरा अपने पति द्वारा तिरस्कृत है लेकिन फिर भी वह अपने पति से प्रेम करती है। कहानी में मीरा कहती है "मैं उन बेवकूफ औरतों में से हूँ जो अपने पति को प्यार करती हूँ"³

इस प्रकार पति-पत्नी में उदासीनता के कारण मीरा को अकेलेपन की समस्या से लड़ना पड़ रहा है।

9) खरीददार: प्रस्तुत कहानी में दहेज की मांग, बदसूरती और बढ़ती महत्वाकांक्षा के कारण अविवाहित रहने की समस्या को दर्शाया है। कहानी की नायिका नीना अपने विवाह के बारे में सुनील के पूछने पर कहती है "तुम तो ऐसे पूछ रहे हो जैसे कोई कहे आज खाना क्यों नहीं खाया? यह कोई अनिवार्य क्रिया है क्या?"⁴

इस प्रकार नीना भी विवाह को अनिवार्य नहीं मानती है। वह ताउम्र अविवाहित रहने का फैसला अपनी माँ को सुनाती है। वह अपने असिस्टेंट कमिश्नर से आगे पदोन्नति प्राप्त करके सचिव पद पर पहुंचने की खाहिश रखती है।

10) खाली: प्रस्तुत कहानी में आधुनिक काल की कामकाजी नारी की बच्चा पैदा करने की समस्या को दर्शाया है। कहानी की नायिका 'वह' नौकरी करती है। उसे शादी के कुछ वर्षों बाद भी बच्चा नहीं हुआ है। इसी कारण उसके पड़ोस की औरत उसे बच्चा होने के इलाज की सलाह देना चाहती है। लेकिन वह इस इलाज को सुनना नहीं चाहती। कहानी में वह कहती है "इलाज? किस चीज का इलाज?"⁵

इस प्रकार आज की आधुनिक नारी अपने कामकाज के व्यस्तता के कारण बच्चों को जन्म नहीं देना चाहती है और न उन्हें संभालने का झंझट मोल लेना चाहती है।

11) एक चीख का इंतजार: यह कहानी नारी के नैसर्गिक वेदना को दर्शाती है। जब वह माँ बनने वाली होती है। तब उसकी प्रसव वेदना के बारे में कहानी की नायिका का देवर कहता है "भाभी, माँ कहा करती है भगवान की कुदरत है की जितना कष्ट हो, उसे उतना ही मोह बच्चे से होता है।"⁶ प्रसव वेदना के वक्त उसे सहारा देने के लिए पति, सास, ससुर का सहारा चाहिए। लेकिन वहां भी वह अकेली ही है। इस प्रकार उसे मिलने वाले पुनर्जन्म के समय भी अकेलेपन की समस्या को कहानी में चित्रित किया गया है।

12) तिहार: तिहार जेल को भेंट देने का मौका वसुमति सरकार नामक एक वकालत करने वाली सिंगल मदर को मिलता है। जो वहां जाकर अलग-अलग कैदी महिलाओं के व्यथा से परिचित होती है। उसे तिहार जेल से लौटते वक्त एक औरत का पत्र मिलता है। जिसमें उसे उस औरत के लड़की से किए गए अपने प्रेमी द्वारा बलात्कार की मालूमात मिलती है। वह यही सोचती है कि घर पर भी उसका प्रेमी विश्वास आया हुआ है और बेटी नताशा भी विश्वास के साथ घर में अकेली है। तब उसके दिल में अलग-अलग ख्याल आते हैं। तो एक लड़की को संभालने की जिम्मेदारी बिना पिता के संभव नहीं है। इससे वह सहमत हो



जाती है। इस प्रकार तिहार कहानी में एक सिंगल मदर की समस्याओं को चित्रित किया गया है।

13) स्त्री वगैरे: प्रस्तुत कहानी यह पति-पत्नी के अनबन की समस्या को दर्शाती है। जिसके अंतर्गत मंदिरा नामक स्त्री कंपनी की वाईस प्रेसिडेंट है। वह अपने बच्चों की सभी जिम्मेदारियां को संभालती है। साथ ही साथ अपने पति सुमेध और उसकी बहनों को भी हमेशा संभालती है। लेकिन सुमेध यह अपनी पत्नी मंदिरा से हमेशा अनबन करता रहता है। तभी मंदिरा अपने मन ही मन सुमेध को कहना चाहती है, “तुझे कुटुंब म्हणजे मी आणि तुझी मुले हे बाकीचे सगळे लेंढार आता तेरी विसर. अजूनही वेळ गेली नाही. कोण जाणे, मी पुन्हा एकदा तुझ्या प्रेमात पडू शकते. कसाही असलास तरी नवरा आहेस मांझा पहला प्रियकर. अजूनही मला वाटत तू मला समजावून घेऊ शकतोस माझी प्रेमाची गरज भागवू शकतोस. मला पुन्हा एकदा सर्वांगाने एक स्त्री बनवू शकतोस.”⁷ (तेरा कुटुंब मतलब मैं और तेरे बच्चे हैं सब बाकी सारे रिश्ते अब तो भूल अभी भी समय नहीं गया कौन जाने मैं फिर तुम से प्रेम करू कैसे भी हो तुम मेरे पति हो मेरे पहले प्रियकर हो। अभी भी मुझे लगता है कि तुम मुझे समा कर ले सकते हो। मेरी प्रेम की भुख को मिटा सकते हो। मुझे फिर पूर्णतः एक स्त्री बना सकते हो।) लेकिन सुमेध यह मंदिरा से हमेशा अनबन करता रहता है। इसीलिए मंदिरा बाल-बच्चों वाले अमोल से नामक व्यक्ति से विवाह बाह्य संबंध बनाए हुए हैं। इस प्रकार अपने पति से प्यार न मिलने की वजह से मंदिरा विवाह बाह्य संबंध रखे हुए हैं इस प्रकार प्रिया तेंडुलकर ने सच्चे प्रेम को पाने की समस्या से ग्रस्त मंदिरा का चित्रण किया हुआ है।

14) शिबानीची अनाहिता: यह कहानी अनमेल प्रेम संबंध पर आधारित है। अनाहिता यह अठराह वर्षीय लड़की छप्पन वर्ष के विक्रम मेहता से प्रेम करती है। आजकल अनमेल प्रेम

संबंध का प्रचलन समाज में ज्यादा दिखाई देता है। ऐसे ही संबंधों को लेकर प्रिया तेंडुलकर ने शिबानीची अनाहिता यह कहानी लिखी हुई है। कहानी में अनाहिता अपने पिता से कहती है “डॅड ! मला वाटलं माच अॅण्टीक झालीय. पण तुम्हीही ! लग्नबिग्न सगळं जुनं झालं आता. मोडीत काढा त्या कल्पना. प्रेम महत्वाचं. रिलेशनशिप महत्वाची. दैटस् लाइफ ! आम्ही प्रेम करतो एकमेकांवर. इटस् लव्ह डॅड! अॅण्ड वेंटस् इट! इनफ! पिरिएड.”⁸ (डॅड! मुझे लगा मा ही अॅण्टीक है। लेकिन आप भी। शादीवादी सारा पुराना हुआ अब! तोड़ दो वह कल्पना! प्यार महत्वपूर्ण! रिलेशनशिप महत्वपूर्ण ! दैटस् लाइफ! हम प्रेम करते हैं एक दूसरे से! इट्स लव्ह डॅड। अॅण्ड दैटस् आप। इनफ। पीरिएड।)

इस प्रकार के विचारों से यह प्रतीत होता है कि आधुनिक युग में शादी यह संस्कार नष्ट होकर अनमेल प्रेम संबंध की समस्या बढ़ती जा रही है।

15) हॅप्पी बर्थ डे: इस कहानी के अंतर्गत सौदामिनी और उसके भाई निरंजन के द्वारा लेखिका यह दर्शाना चाहती है कि आज के आधुनिक युग में भी लड़का लड़की के परवरिश में भी भेदभाव हो रहा है। सौदामिनी के जीवन में अपने भाई के आने से ही संघर्ष पैदा हुआ है। हमेशा अपने मां और दादी द्वारा तिरस्कृत होना पड़ा भाई निरंजन द्वारा असम्मानित होना पड़ा साथ ही पति सुबोध के लालच के कारण उसे छोड़ना पड़ा। दो बच्चों के पेट से गिर जाने के कारण बांझ रहना पड़ा। और आखिर में अपने प्यारे भाई को हॉस्पिटल में इलाज के लिए अमेरिका जैसे देश में डर-डर की ठोकर खानी।

इस प्रकार सौदामिनी को अपने जीवन में अनेक समस्याओं से जूझना पड़ा है।

16) खेळ मांडियेला: इस कहानी के अंतर्गत एक तलाकशुदा औरत का राजकीय क्षेत्र में जो संघर्ष करना पड़ता है उसे दर्शाया



हुआ है। निवेदिता यह विधानसभा का इलेक्शन लड़ रही है। तभी उसे अपने इलेक्शन के तहत सात गांव में भाषण का आयोजन किया गया है। तब उसे आने वाली समस्याओं को कहानी के अंतर्गत दर्शाया है। यहां पर एक तलाकशुदा औरतों का राजकीय क्षेत्र में जिन समस्याओं को उसे जूझना पड़ता है उसका चित्रण किया है।

17) बाप: कहानी में नायिका अंजु यह अपने पिता द्वारा बहुत लाड प्यार में पली बड़ी लड़की है। लेकिन वह अब तलाकशुदा है। पढ़ाई के लिए कैलिफोर्निया गई है। वहां से उसे शादीशुदा मर्द संजय देशमुख से प्रेम होता है। यह बात जब उसके पिता को पता चलती है। तो वह उस बात का विरोध करते हैं। इस प्रकार अंजु अपने जीवन में अकेलेपन को झेलती हुई नजर आती है।

18) मां.. कहानी में मंदा नामक युवती अपने पिता द्वारा चलाए जा रहे ज्योतिषशास्त्र के व्यवसाय को आगे चलाती है। लेकिन अपने पिता के दबाव के कारण वह अविवाहित रहना पड़ता है। अपने पिता से विरासत में ज्योतिषशास्त्र का व्यवसाय मिला लेकिन अविवाहित रहना पड़ा। इसी समस्या से ग्रस्त मंदा कहानी में नजर आती है।

19) दिल्ली: कहानी के अंतर्गत सौदामिनी नामक स्त्री राजकीय क्षेत्र के काम कर रही है। लेकिन उसके पति का उद्योग, अपने बेटे के अक्सीडेंट केस तथा बैंक में किए गए व्यवहार को दबाने के लिए अपने पिता द्वारा पालीत बापूसाहेब जैन जो आज गृहमंत्री है। उसके सामने प्रस्ताव रखती है कि इस भ्रष्टाचार को दबाए। यह सब करने के लिए सौदामिनी बापूसाहेब जैन के साथ अनैतिक संबंध रखने के लिए वह

विवश होती है। इस प्रकार अनैतिक विवाह बाह्य संबंध की समस्या को लेखिका ने दर्शाया है।

निष्कर्ष:

इस प्रकार इन दोनों लेखिकाओं की कहानियों में दंपत्य जीवन की घुटन, स्वतंत्रता का अभाव, अविवाहित रहने की समस्या, पति-पत्नी में उदासीनता की समस्या, यौन शोषण की समस्या, अकेलेपन की समस्या, बच्चा पैदा करने की समस्या, अनमेल प्रेम संबंध की समस्या, लड़का लड़की में भेदभाव, सिंगल मदर की समस्या और यहां तक की जो वेदना उसे अपना बच्चा पैदा करते वक्त होती है वह दर्द इस प्रकार की अलग-अलग प्रकार की समस्याओं से जुझती हुई आज की नारी की समस्याओं का चित्रण इन दोनों लेखिकाओं ने अपने कहानी साहित्य में किया हुआ नजर आता है।

संदर्भ:

1. किरण बाला अरोड़ा, साठोत्तरी हिंदी उपन्यासों में नारी, पृ. 244
2. डॉ.रमा नवले - मृदुला गर्ग के कथा साहित्य में नारी, पृ. 78
3. मृदुला गर्ग- संपूर्ण कहानीयां, पृ. 259
4. मृदुला गर्ग- संपूर्ण कहानीयां, पृ. 267
5. मृदुला गर्ग- संपूर्ण कहानीयां, पृ. 301
6. मृदुला गर्ग- संपूर्ण कहानीयां, पृ. 53
7. प्रिया तेंडुलकर - तिहार, पृ. 56
8. प्रिया तेंडुलकर - तिहार, पृ. 72